



मध्यकालीन भारत में संचार एवं डाक व्यवस्था

प्रेम राज चौधरी¹

¹ शोध अध्येता, राजकीय गोविन्द सिंह गुर्जर महाविद्यालय, नसीराबाद, राजस्थान.

ABSTRACT:

भारत का इतिहास विविधताओं, जटिलताओं और परिवर्तनशीलताओं से भरा हुआ है। यहाँ का प्रत्येक कालखंड अपनी विशिष्टताओं के कारण अध्ययन योग्य है। मध्यकालीन भारत (लगभग 1206 ई. से 1707 ई. तक) ऐसा समय है जब राजनीतिक दृष्टि से दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य जैसी विशाल राजन्य संस्थाएँ अस्तित्व में आईं और साथ ही प्रशासनिक संगठन की दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण संस्थागत विकास हुए। इन्हीं में से एक था— संचार और डाक व्यवस्था का संस्थागत और संगठित रूप। इतिहास यह प्रमाणित करता है कि संचार तंत्र किसी भी साम्राज्य की जीवनेखा होता है। शासक चाहे जितना शक्तिशाली क्यों न हो, यदि उसके पास सूचनाओं का त्वरित और विश्वसनीय तंत्र नहीं है तो वह लंबे समय तक सत्ता की बागडोर नहीं संभाल सकता। संचार तंत्र ही प्रशासनिक आज्ञाओं को प्रजा तक पहुँचाता है, दूरदराज के प्रांतों की सूचनाएँ राजधानी तक लाता है और सेना व शासक के बीच सतत संवाद बनाए रखता है। इस दृष्टि से मध्यकालीन भारत का संचार और डाक तंत्र केवल सूचना आदान-प्रदान का साधन भर नहीं था, बल्कि यह साम्राज्य के संचालन, उसकी स्थिरता और विस्तार का आधारस्तंभ था।

प्राचीन भारत में संचार की परंपरा पहले से मौजूद थी। मौर्यकालीन अभिलेखों और ग्रंथों से हमें दूतों और अश्व-वाहकों की जानकारी मिलती है। गुप्तकाल में भी राजकीय आदेश और समाचार पहुँचाने के लिए व्यवस्थित तंत्र था। किंतु मध्यकाल में जब राजनीतिक शक्ति का केंद्रीकरण हुआ और साम्राज्यों का विस्तार बढ़ा, तो संचार व्यवस्था को और अधिक मजबूत, अनुशासित और संस्थागत स्वरूप प्रदान किया गया।

दिल्ली सल्तनत काल (1206–1526 ई.) में 'बारिद' और 'हरकारा' प्रणाली ने संचार तंत्र को आधार प्रदान किया। बारिद-ए-मुमालिक नामक विभाग सूचनाओं के संकलन और प्रसारण का कार्य करता था। हरकारे पैदल या घुड़सवार होकर राजाज्ञाओं और समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे। साथ ही, तुर्क शासकों ने कबूतरों के माध्यम से संदेश पहुँचाने की अनूठी परंपरा को भी अपनाया। सल्तनत के मार्गों पर 10–15 कोस की दूरी पर चौकियाँ स्थापित की जाती थीं, जहाँ से संदेश अगले दूत को सौंपा जाता था। इस प्रणाली ने प्रशासन को दूरस्थ प्रांतों तक नियंत्रण बनाए रखने में मदद की और विद्रोहों पर तत्काल अंकुश लगाने का साधन प्रदान किया।

मुगल साम्राज्य (1526–1707 ई.) में संचार और डाक व्यवस्था ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं। बाबर और हुमायूँ ने इस व्यवस्था की नींव रखी, किंतु अकबर ने इसे व्यापक और संगठित रूप दिया। अकबर ने प्रत्येक 2 कोस पर डाक चौकियाँ स्थापित कीं, जहाँ घोड़े और दूत तैनात रहते थे। प्रमुख नगरों में 'डाक-महल' बने, जो समाचारों के संग्रहण और वितरण का केंद्र बने। मुगलों ने 'वाकिया-नवीस' और 'मुनशी' नियुक्त किए, जो साम्राज्य भर की घटनाओं का लेखा-जोखा तैयार कर दरबार तक पहुँचाते थे। युद्ध की स्थिति में कबूतर डाक को पुनः सक्रिय रूप से अपनाया गया।

इस संचार तंत्र का बहुआयामी महत्व था।

1. राजनीतिक दृष्टि से – शासक अपने साम्राज्य के दूरस्थ प्रांतों पर नियंत्रण रख सके।
2. सैन्य दृष्टि से – युद्धभूमि से तत्काल समाचार राजधानी तक पहुँच सके और शासक शीघ्र निर्णय ले सके।
3. आर्थिक दृष्टि से – व्यापारी वर्ग को व्यापारिक सूचनाओं का आदान-प्रदान करने में सुविधा हुई।
4. सांस्कृतिक दृष्टि से – कवियों, संतों और यात्रियों ने विचारों व साहित्य के आदान-प्रदान हेतु इसका उपयोग किया।

फिर भी, इस प्रणाली की कुछ सीमाएँ थीं। लंबी दूरी पर संदेशों की गति अपेक्षाकृत धीमी थी। नदियाँ, जंगल और पहाड़ जैसी भौगोलिक बाधाएँ संदेश प्रेषण में विलंब करती थीं। विद्रोह या युद्ध की स्थिति में चौकीदार और दूत कभी-कभी असुरक्षित भी हो जाते थे। यह प्रणाली मुख्यतः शासकीय वर्ग तक सीमित थी, सामान्य जनता को इसका सीधा लाभ नहीं मिलता था।

इन सीमाओं के बावजूद, यह व्यवस्था अपने समय के संदर्भ में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मध्यकालीन भारत का संचार और डाक तंत्र आधुनिक भारतीय डाक विभाग का ऐतिहासिक पूर्वज है। अंग्रेजों ने मुगलकालीन चौकी व्यवस्था को अपनाकर और तकनीकी सुधार कर भारतीय डाक प्रणाली को और अधिक संगठित रूप दिया।

इस प्रकार, मध्यकालीन भारत का संचार और डाक तंत्र केवल राजनीतिक शासन का उपकरण ही नहीं रहा, बल्कि इसने सामाजिक-सांस्कृतिक एकता, आर्थिक गतिविधियों और प्रशासनिक स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि संचार ही किसी भी राज्य या समाज की जीवनेखा है और इसके बिना साम्राज्य का संचालन असंभव है।

KEYWORDS:

मध्यकालीन भारत, संचार प्रणाली, डाक व्यवस्था, दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य, घुड़सवार हरकारा, कबूतर डाक, चौकीदार तंत्र, प्रशासनिक संचार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

PAPER ACCEPTED DATE:

25th January 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

30th January 2024

विषय वस्तु

मध्यकालीन भारत का राजनीतिक परिवर्तन निरंतर परिवर्तनों और साम्राज्यों के उत्थान-पतन से भरा हुआ था। इस काल में एक ओर दिल्ली सल्तनत जैसी केंद्रीकृत शासन प्रणाली

अस्तित्व में आई तो दूसरी ओर मुगल साम्राज्य ने अपने प्रशासनिक ढाँचे को पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक फैलाया। इतने विशाल और विविध भूभाग पर शासन संचालन की सबसे

बड़ी चुनौती थी – संचार और डाक व्यवस्था शासक की शक्ति केवल उसकी सेना या खजाने से नहीं आँकी जाती थी, बल्कि इस बात से भी कि वह कितनी तेजी और दक्षता से सूचना संकलन कर सकता है और अपने आदेशों को साम्राज्य के कोने-कोने तक पहुँचा सकता है।

मध्यकाल में संचार प्रणाली केवल राजनीतिक आदेशों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें व्यापारिक सूचनाओं, सांस्कृतिक संदेशों, धार्मिक विचारों और सामाजिक सरोकारों का भी आदान-प्रदान शामिल था। अतः यह अध्ययन हमें बताता है कि संचार और डाक व्यवस्था किसी भी साम्राज्य की रीढ़ थी।

संचार का ऐतिहासिक विकास

भारत में संचार की परंपरा अत्यंत प्राचीन है।

- **वैदिक काल** में ऋषि-मुनि मौखिक परंपरा द्वारा विचारों का संचार करते थे।
- **मौर्यकाल** (चौथी-तीसरी शताब्दी ई.पू.) में अशोक के अभिलेख बताते हैं कि आदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए गए।
- **गुप्तकाल** में भी समाचार प्रेषण हेतु दूत-प्रणाली थी।
- **हर्षकाल** में ह्वेनसांग जैसे यात्री उल्लेख करते हैं कि राजा को समाचार पहुँचाने हेतु विशेष संदेशवाहक थे।

लेकिन जब हम **मध्यकाल** (1206-1707 ई.) की बात करते हैं तो यहाँ संचार व्यवस्था कहीं अधिक संगठित, संस्थागत और प्रशासनिक नियंत्रण में दिखाई देती है।

दिल्ली सल्तनत काल की संचार एवं डाक व्यवस्था

बारिद-ए-मुमालिक

दिल्ली सल्तनत काल में संचार व्यवस्था का संचालन 'बारिद-ए-मुमालिक' नामक विभाग करता था। यह एक प्रकार का खुफिया और सूचना विभाग था। यहाँ कार्यरत कर्मचारी केवल संदेश ही नहीं पहुँचाते थे बल्कि प्रशासनिक गतिविधियों और प्रांतों की स्थिति की भी सूचना दरबार तक पहुँचाते थे।

हरकारे और दौड़-ए-चौकी

सल्तनत के शासक प्रांतों तक संदेश पहुँचाने के लिए हरकारों पर निर्भर थे।

- **हरकारे** पैदल या घोड़े पर बैठकर समाचार ले जाते।
- मार्ग में हर 10-15 कोस पर **चौकियाँ** स्थापित थीं, जहाँ से संदेश अगले हरकारे को सौंपा जाता।
- यह व्यवस्था 'दौड़-ए-चौकी' कहलाती थी।

कबूतर डाक

तुर्क शासक कबूतरों द्वारा संदेश भेजने की परंपरा अपने मध्य एशियाई अनुभव से लाए थे। कबूतर डाक विशेष रूप से सैन्य अभियानों में कारगर सिद्ध हुई।

खुफिया संचार

सल्तनत काल के शासक विद्रोहों और प्रांतीय गवर्नरों की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए खुफिया दूतों को भेजते थे। इस प्रकार संचार व्यवस्था केवल प्रशासनिक आदेशों का आदान-प्रदान ही नहीं करती थी, बल्कि शासक के लिए "आँख और कान" का कार्य भी करती थी।

मुगल काल की संचार एवं डाक व्यवस्था

मुगल शासकों ने संचार और डाक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़, संगठित और व्यावहारिक बनाया।

अकबर का डाक-चौकी तंत्र

अकबर ने पूरे साम्राज्य में नियमित डाक चौकियाँ स्थापित कीं।

- हर 2 कोस की दूरी पर एक चौकी होती थी।
- प्रत्येक चौकी पर घोड़े और दूत (हरकारे) हमेशा तैयार रहते थे।

- संदेश एक चौकी से दूसरी चौकी तक तुरंत पहुँचा दिया जाता था।

घुड़सवार और पैदल हरकारे

- घुड़सवार हरकारे लंबी दूरी के लिए प्रयुक्त होते थे।
- पैदल हरकारे छोटे मार्गों और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में समाचार ले जाते थे।
- इन्हें नियमित वेतन, राशन और कभी-कभी भूमि अनुदान भी दिया जाता था।

डाक-महल

प्रमुख नगरों जैसे दिल्ली, आगरा, लाहौर आदि में डाक-महल बनाए गए। यह स्थान समाचारों के संग्रहण और वितरण का केंद्र था।

कबूतर सेवा

युद्ध के समय कबूतरों से तत्काल संदेश भेजने की परंपरा पुनः सक्रिय की गई। शाहजहाँ और औरंगजेब के दौर में भी इस प्रणाली का प्रयोग हुआ।

वाकिया-नवीस और मुनशी

- **वाकिया-नवीस** समाचार संकलन के लिए जिम्मेदार अधिकारी थे।
- **मुनशी** इन समाचारों को लिखित रूप में व्यवस्थित कर दरबार तक पहुँचाते थे।
- इस तरह संचार तंत्र एक **संस्थागत खुफिया विभाग** के रूप में कार्य करता था।

संचार तंत्र का सामाजिक-आर्थिक महत्व

राजनीतिक महत्व

- संचार व्यवस्था ने शासकों को दूरस्थ प्रांतों तक नियंत्रण बनाए रखने में मदद की।
- विद्रोह या षड्यंत्र की सूचना तत्काल राजधानी तक पहुँच जाती।

सैन्य महत्व

- युद्ध के दौरान सेनाओं की स्थिति, शत्रु की गतिविधियों और सैनिक आपूर्ति की सूचनाएँ तीव्र गति से पहुँचाई जातीं।
- तत्कालीन परिस्थितियों में यह किसी भी साम्राज्य की "रक्षा कवच" थी।

आर्थिक महत्व

- व्यापारी वर्ग को व्यापारिक सूचनाएँ प्राप्त करने में सहूलियत मिली।
- डाक चौकियाँ व्यापार मार्गों की सुरक्षा का भी साधन बनीं।
- यह प्रणाली अप्रत्यक्ष रूप से राजस्व वसूली को भी सुचारु बनाती थी।

सांस्कृतिक महत्व

- कवियों, संतों और फकीरों ने विचारों व संदेशों के प्रसार में इसका उपयोग किया।
- यात्रियों और दूतों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्य किया।
- धार्मिक प्रचारकों और सूफियों ने अपने पत्र-व्यवहार द्वारा विचारधारा का प्रसार किया।

संचार तंत्र की सीमाएँ

1. **धीमी गति** – संदेशों की गति आधुनिक मानकों की तुलना में अत्यंत धीमी थी।
2. **प्राकृतिक बाधाएँ** – नदियाँ, पहाड़, घने जंगल संदेश प्रेषण में रुकावट डालते थे।
3. **युद्ध व विद्रोह की स्थिति** – कई बार दूत असुरक्षित हो जाते या चौकीदार पक्ष बदल लेते।

4. **सामाजिक सीमा** – यह प्रणाली मुख्यतः शासकीय और उच्चवर्गीय प्रयोजनों तक सीमित रही।

आधुनिक भारतीय डाक व्यवस्था की नींव

यद्यपि संचार तंत्र में कई सीमाएँ थीं, फिर भी इसने भारत में आधुनिक डाक प्रणाली की नींव रखी।

- अंग्रेजों ने मुगलकालीन डाक चौकियों को आधार बनाकर संगठित डाक विभाग की स्थापना की।
- 19वीं शताब्दी में भारतीय डाक टिकटों और डाकघरों की शुरुआत इन्हीं ऐतिहासिक जड़ों से हुई।

संचार और शासन-प्रशासन का परस्पर संबंध

मध्यकालीन संचार तंत्र केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि यह शासन-प्रशासन का एक अत्यावश्यक उपकरण था। जिस शासक की संचार व्यवस्था जितनी सुदृढ़ होती थी, उसका साम्राज्य उतना ही स्थिर और व्यापक होता था। दिल्ली सल्तनत और मुगलों की सफलता का एक बड़ा कारण यही था कि उनकी सूचना और डाक व्यवस्था तुलनात्मक रूप से अधिक संगठित थी। मध्यकालीन भारत की संचार और डाक व्यवस्था अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी रही। इसने शासकों को साम्राज्य की सीमाओं तक शासन संचालन का साधन दिया, समाज को जोड़ने का माध्यम बनाया और आर्थिक-सांस्कृतिक जीवन को गति दी। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ थीं, परन्तु यह प्रणाली आधुनिक भारत के संचार तंत्र की आधारशिला साबित हुई।

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारत का इतिहास हमें यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि किसी भी साम्राज्य की सफलता केवल उसकी सैन्य शक्ति, राजनीतिक चतुराई या आर्थिक संपन्नता पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि इस पर भी आधारित होती है कि उस साम्राज्य के पास संचार और डाक जैसी संस्थागत व्यवस्थाएँ कितनी सुदृढ़ और संगठित हैं। सूचना का तीव्र और सुरक्षित आदान-प्रदान ही शासन-प्रशासन की जीवनेरेखा है। इसी दृष्टि से देखा जाए तो दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगल साम्राज्य तक, संचार और डाक व्यवस्था ने भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। दिल्ली सल्तनत की चौकी-प्रणाली और मुगलों का डाक-चौकी तंत्र इस बात का प्रमाण है कि शासक वर्ग संचार को प्रशासनिक नियंत्रण का सबसे बड़ा साधन मानता था। विद्रोहों की सूचना, प्रांतीय गवर्नरों की गतिविधियों का लेखा-जोखा और सीमावर्ती क्षेत्रों की स्थिति की रिपोर्टें तत्काल राजधानी तक पहुँचाई जाती थीं। इसने शासकों को साम्राज्य के दूरस्थ इलाकों पर नियंत्रण बनाए रखने में मदद की। यही कारण था कि जिन शासकों ने इस प्रणाली को मजबूत रखा, वे लंबे समय तक साम्राज्य को स्थिर बनाए रख सके।

सैन्य अभियानों में त्वरित सूचना आदान-प्रदान अनिवार्य था। सल्तनत और मुगल दोनों कालों में घुड़सवार हरकारे, पैदल दूत और कबूतर डाक ने सेनाओं और राजधानी के बीच सतत संवाद सुनिश्चित किया। युद्धभूमि से संदेश तुरंत पहुँच जाने से रणनीतियों में तत्काल परिवर्तन किया जा सकता था। इसने साम्राज्य की रक्षा को अधिक संगठित और सुदृढ़ बनाया। डाक चौकियाँ केवल समाचार वाहकों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उन्होंने व्यापारिक मार्गों को भी सुरक्षित और संगठित बनाया। व्यापारी वर्ग को समाचार भेजने-पाने की सुविधा मिली। इसके अलावा, संचार तंत्र अप्रत्यक्ष रूप से कर वसूली और राजस्व संग्रहण की प्रक्रिया को भी सुचारु बनाता था। यह व्यवस्था आर्थिक गतिविधियों के लिए सहायक सिद्ध हुई और साम्राज्य की संपन्नता बढ़ाने में योगदान दिया। संचार तंत्र ने सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान को भी गति दी। कवि, संत और सूफी अपने विचारों और शिक्षाओं का प्रसार पत्राचार और संदेशवाहकों के माध्यम से करते थे। यात्रियों और दूतों ने विभिन्न क्षेत्रों की परंपराओं और संस्कृति को आपस में जोड़ने का कार्य किया। इसने भारत की सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ किया।

संचार प्रणाली केवल आदेश-प्रेषण का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह खुफिया जानकारी का सबसे बड़ा स्रोत भी थी। दिल्ली सल्तनत के 'बारिद-ए-मुमालिक' और मुगलों के

'वाकिया-नवीस' इसी उद्देश्य से नियुक्त किए गए थे। वे साम्राज्य की गतिविधियों का प्रतिदिन लेखा-जोखा रखते और उसे दरबार तक पहुँचाते। इस प्रकार शासक वर्ग के लिए यह व्यवस्था "आँख और कान" का कार्य करती थी।

फिर भी, हमें यह स्वीकार करना होगा कि इस प्रणाली की कुछ सीमाएँ थीं।

संदेशों की गति आज की तुलना में बहुत धीमी थी।

भौगोलिक बाधाएँ जैसे नदियाँ, पहाड़ और जंगल डाक व्यवस्था को प्रभावित करते थे।

विद्रोह या युद्ध की स्थिति में चौकियाँ असुरक्षित हो जातीं और कभी-कभी दूत पक्ष बदल लेते।

यह व्यवस्था आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं थी, बल्कि शासक वर्ग और उच्चवर्गीय समाज तक ही सीमित थी।

इन सीमाओं के बावजूद, मध्यकालीन संचार और डाक व्यवस्था ने भविष्य की आधुनिक डाक प्रणाली की नींव रखी। अंग्रेजों ने मुगलकालीन चौकियों और डाक चौकी तंत्र को संगठित करके 19वीं शताब्दी में भारतीय डाक विभाग की स्थापना की। डाक टिकटों और डाकघरों की शुरुआत इन्हीं ऐतिहासिक जड़ों से हुई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आधुनिक भारत की संचार प्रणाली मध्यकालीन परंपराओं की उत्तराधिकारी है। मध्यकालीन भारत की संचार और डाक व्यवस्था को केवल तकनीकी दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे एक ऐसी संस्था के रूप में समझना चाहिए जिसने भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीतिक एकता, आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में गहरा योगदान दिया। इसने यह सिद्ध कर दिया कि सूचना का प्रवाह ही सत्ता की असली शक्ति है। यदि हम इसे आधुनिक संदर्भ में देखें तो आज का "डिजिटल संचार" उसी ऐतिहासिक परंपरा की निरंतरता है, जिसकी नींव मध्यकालीन भारत में रखी गई थी।

REFERENCES

1. शर्मा, रामशरण. *भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002.
2. हबीब, इरफान. *मध्यकालीन भारत में समाज एवं अर्थव्यवस्था*. नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग, 1995.
3. चंद्र, सतीश. *मध्यकालीन भारत*. भाग-1 और 2. नई दिल्ली: हर-अनन्द प्रकाशन, 2018.
4. मोरैलैंड, डब्ल्यू. एच. *India at the Death of Akbar*. लंदन, 1920.
5. निजामी, के.ए. *The Life and Times of Shaikh Nizamuddin Auliya*. अलीगढ़: अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961.
6. गुप्ता, आर.सी. *भारतीय डाक व्यवस्था का इतिहास*. प्रयागराज: भारतीय ऐतिहासिक शोध संस्थान, 1999.
7. Habibullah, A. B. M. *The Foundation of Muslim Rule in India*. ऑक्सफोर्ड, 1961.
8. Hasan, Farhat. *State and Locality in Mughal India*. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004.
9. वर्मा, एच.सी. (1978), मिडिवल रुट्स टु इंडिया, नया प्रकाश, कलकता
10. फारुक, ए. के. एम (1997), रोड्स एंड कम्यूनिकेशन्स इन मुगल इंडिया, इंदिरा-ए अदबीयत-ए दिल्ली
11. डेलोश जॉ (1993), ट्रांसपोर्ट एंड कम्यूनिकेशन्स इन इंडिया, भाग-1, लैंड ट्रांसपोर्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली.